2021-22

Indian Women Thinkers *in the* Contemporary Indian Society

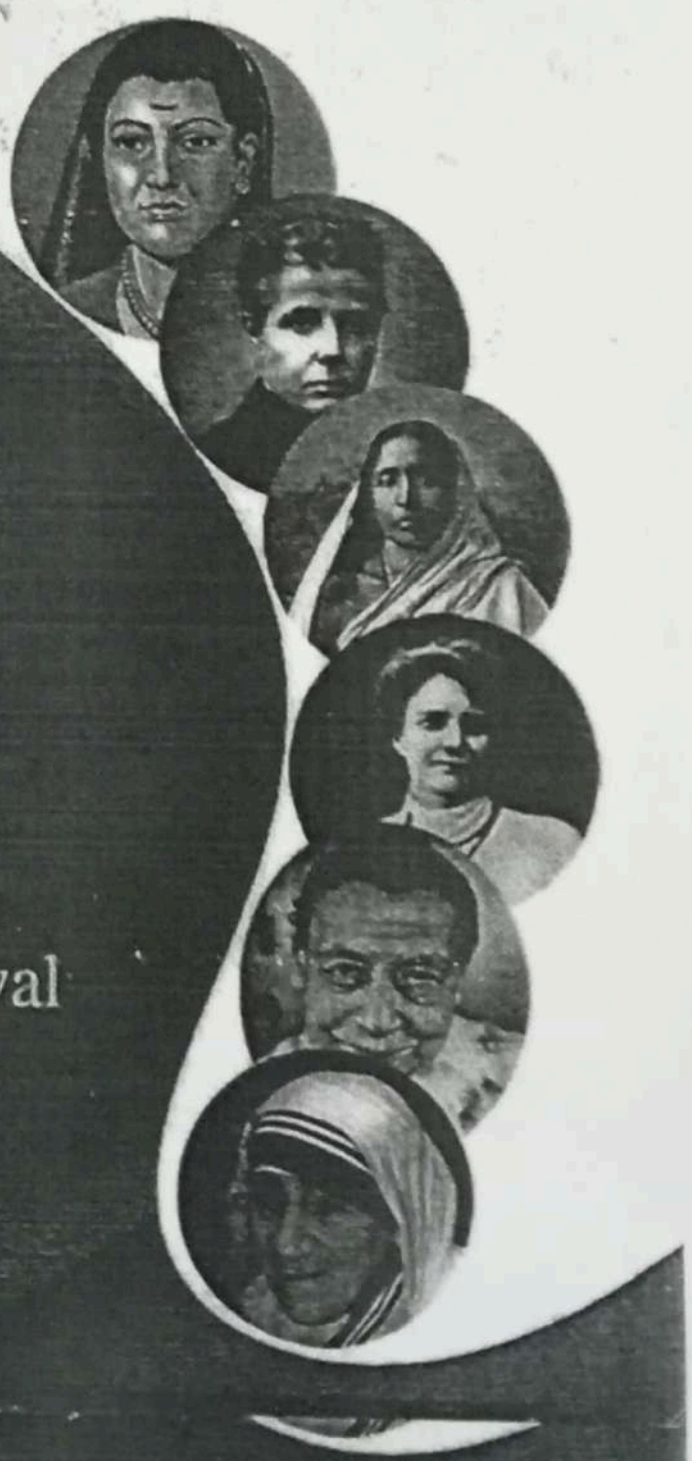

Edited by
Dr. Sujata Saha
Dr. Minakshi Biswal
Dr. Asha Pandey

KANISHKA PUBLISHERS, DISTRIBUTORS
4697/5-21A, Ansari Road, Daryaganj
New Delhi -110 002
Phones : 2327 0497, 2328 8285
Fax : 011-2328 8285
E-mail : kanishka_publishing@yahoo.co.in

Indian Women Thinkers in the Contemporary Indian Society

First Published 2022

© Editors

ISBN : 978-93-91450-11-3

PRINTED IN INDIA

Published by Madan Sachdeva for Kanishka Publishers, Distributors, 4697/5-21A, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002, Typeset by Sunshine Graphics, Delhi, and Printed at Rajdhani Printers, Delhi.

18

भगिनी निवेदिता का शैक्षणिक व सामाजिक योगदान

डॉ. नेहा कल्याणी

शोध–प्रपत्र

आज के समाज में मूल्यों का स्तर गिरता जा रहा है। आज क्यों व्यक्ति स्वार्थी होकर अपने आप में सिमटता जा रहा है? क्यों भाई–भाई का दुश्मन बन गया है? क्यों विश्वास, नैतिकता, सच्चाई, ईमानदारी, संस्कार ये सब केवल साहित्यिक बातें रह रही है। शिष्टाचार, सदाचार, आदि कुछ धराशायी होकर समाज के उच्च आदर्शों व मूल्यों से दूर जा पड़े है। इन प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए हमें इधर–उधर भटकने की जरूरत नहीं है, बल्कि आत्मविश्लेषण व आत्मसाक्षात्कार करने की जरूरत है।

निसंदेह सहजता से हर दिन भिन्न–भिन्न भूमिकायें जीते हुए, महिलायें किसी भी समाज का आधार स्तम्भ है। प्राचीन काल से ही पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं की स्थिति नगण्य और उपेक्षित रही है किन्तु फिर भी हमारा साहित्य अनेक ऐसी महिलाओं से गौरवान्वित है जिन्होंने अपने कृतित्व व समर्पण से देश के सम्मान व विकास के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। भगिनी निवेदिता भी उन्हीं गणनीय स्त्रियों में से एक हैं भले ही वे मूलतः भारत की नागरिक नहीं है किन्तु उनकी निष्ठा, समर्पण एवं त्याग पर लेशमात्र भी सन्देह नहीं किया जा सकता।

's life and teachings demonstrate the ideal of the
d of God.

es of Indian womanhood are courage, serenity,
ess, compassion, wisdom, and an intuitive
. Holy Mother possessed all these virtues. Since
h gifts is the dream of all women, Holy Mother
he symbol of aspiration of women everywhere

r immaculate purity, extraordinary forbearance,
iconditional love, wisdom and spiritual
Vivekananda regarded Sri Sarada Devi as the
modern age. He believed that with the advent
piritual awakening of women in modern times
ould have far-reaching consequences for the
nanity.

worst side of man, but she never lost faith in
n affection, sympathy, and guidance, he could
tions.

da Math and Ramakrishna Sarada Mission, a
omen was founded in the honour of Sarada

amakrishna Order, wrote of her in a hymn

, who is mother, friend, saint and teacher in
one!
t in efforts to remove ignorance from the
is spiritual children who took refuge in her
ntire universe and saviour of the world,
tees who transmits the boon of liberation,
or the world but remains ever absorbed in
God realization.
alutations unto Thee."

s an ordinary woman but everything about

REFERENCES

https://en.wikipedia.org/wiki/Sarada_Devi

http://www.centre-vedantique-geneve.org/page/en/sri-sarada-devi.html

https://vedanta.org/our-teachers/sri-sarada-devi/

https://www.srv.org/aboutus-sp-50474211/idealsandteachers?view=article&id=5:srisaradadevi&catid=18:idealsandteachers

https://awaken.com/2013/03/sarada-devi/

https://kaladymath.org/our-inspiration/sri-maa-sarada-devi/

https://www.rkmission.org.my/sri-sarada-devi/

https://rkmrc.in/the-holy-trio/

http://rkmvadodara.com/shri-maa-sarada-devi/

https://vivekdisha.in/sardadevilife.php

https://www.vedantaaustin.org/vedanta/sri-sarada-devi?tmpl=/system/app/templates/print/&showPrintDialog=1

https://sfvedanta.org/about-vedanta/sri-sarada-devi/

http://vedantaprov.org/sri-sarada-devi/

http://www.maasamiti.org/samiti/education/mothers_teachings.php

https://www.gaia.com/article/ramakrishna-sarada-devi-spiritual-ecstasy-love-and-vedanta

https://stuartperrin.com/about-sarada-devi/

विवेकानन्द के साथ अपने अनुभवों का जिक अपनी पुस्तक 'द मास्टर ऐज आई सा हिम' में किया है। वे स्वयं को विवेकानन्द की आध्यात्मिक पुत्री कहती थी।

सामाजिक योगदान

परोपकार, सेवा, मानवता के साथ वो पूरी तरह देश के उपेक्षित व निसहाय वर्ग के लिए समर्पित हो गई थी। जो भी उनके सम्पर्क में आता, वे अपने सेवाभाव और ज्ञान से उसका जीवन आलोकित कर देती। उन्होंने अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों को प्रेरणा व सहयोग दिया। कांग्रेस के गरम दल व नरम दल दोनों से ही उनके आत्मीय सम्बन्ध थे। उन्होंने भारतीय कलाकारों को स्वदेशी कलाओं के विकास के लिए प्रेरित किया। नन्दलाल बोस, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे कलाकारों को पुरातन भारतीय कला के पुनरूज्जीवन में सहयोग किया। सुब्रह्मण्यम भारती के विख्यात भारतभक्ति स्तोत्र की प्रेरणा भी निवेदिता ही थी। श्री अरविन्द के क्रांतिकारियों को स्वतन्त्रता के लिए संगठित करने के कार्य में भी उन्होंने सहयोग दिया। किसी विदेशी विद्वान के द्वारा भारतीय संस्कृति पर अपमानजनक टिप्पणी करने पर वे तर्कयुक्त खण्डन करती। उनके द्वारा लिखित हिन्दू जीवन पद्धति का अध्ययन वर्तमान युग में भी प्रासंगिक है।

वे रामकृष्ण मिशन के सेवाकार्य में सहयोग करती। कलकता में भीषण प्लेग के दौरान भारतीय बस्तियों में सेवा कार्य का आदर्श स्थापित किया। वे भारतीय स्वतन्त्रता की समर्थक थी, किन्तु विवेकानन्द के सिद्धान्तों और आदर्शों का राजनीति से कोई वास्ता नहीं था, अतएव विवेकानन्द की मृत्यु के बाद उन्होंने संघ से त्यागपत्र दिया। यद्यपि प्रत्यक्षतः उन्होंने कभी भी किसी राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग नहीं लिया, किन्तु अपने लेखों और व्याख्यानों के माध्यम से उन्होंने भारतीय युवाओं को स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित किया।

शैक्षिक योगदान

समाज के सभी स्त्री–पुरूषों की शारीरिक व मानसिक योग्यता समान नहीं होती इसलिए सफलता के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने आदर्श को जीवन में ढालना चाहिये; न कि दूसरों के आदर्श का अनुसरण करना चाहिये। वर्तमान समय में मानव अपने दुःखों से दुःखी नहीं हैं वह दूसरों के सुखों से दुखी है। हम एक दूसरे की उन्नति सहन नहीं कर पाते और इसलिए दुःखी रहते है। इसके लिए विवेकानन्द कहते है कि हम सबके प्रति मैत्री भाव रखें, दीन दुखियों के प्रति दयावान हो, लोगों को सत्कर्म करते देख सुखी हों और दुष्टों के प्रति उपेक्षा दिखायें। अपने कष्टों व

18

निवेदिता का सामाजिक योगदान

डॉ. नेहा कल्याणी

गेरता जा रहा है। आज क्यों व्यक्ति स्वार्थी होकर
? क्यों भाई–भाई का दुश्मन बन गया है? क्यों
दारी, संस्कार ये सब केवल साहित्यिक बातें रह
दे कुछ धराशायी होकर समाज के उच्च आदर्शों
श्नों का उत्तर जानने के लिए हमें इधर–उधर
क आत्मविश्लेषण व आत्मसाक्षात्कार करने की

भिन्न–भिन्न भूमिकायें जीते हुए, महिलायें किसी
चीन काल से ही पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं
ही है किन्तु फिर भी हमारा साहित्य अनेक ऐसी
ने अपने कृतित्व व समर्पण से देश के सम्मान व
कर दिया। भगिनी निवेदिता भी उन्हीं गणनीय
: भारत की नागरिक नहीं है किन्तु उनकी निष्ठा,
। सन्देह नहीं किया जा सकता।

असमानता, उत्पीड़न, वित्तीय निर्भरता, अशिक्षा और अन्धविश्वास की जंजीरों में जकड़ी नारी समाज के उत्थान के लिए भगिनी निवेदिता निरन्तर संघर्षरत एक ब्रिटिश आइरिश सामाजिक कार्यकर्ता, लेखिका, शिक्षिका एवं स्वामी विवेकानन्द की शिष्या थी। उनका मूल नाम मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल था। पिता की मृत्यु के बाद उनकी नानी हैमिल्टन ने उनकी देखभाल की। वे आयरलेण्ड स्वाधीनता आन्दोलन के शीर्ष नेताओं में एक थी। हैलिफैक्स कॉलेज में अध्ययन करते हुए प्रधानाध्यापिका ने उन्हें निज त्याग के महत्व को समझाया। उन्होंने भौतिकी, कला, संगीत और साहित्य का अध्ययन किया। यद्यपि वे एक सम्पन्न परिवार से थी, परन्तु 10 वर्ष की उम्र में ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण 17 वर्ष की उम्र में ही उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियों के लिए शिक्षिका की नौकरी करने लगी। प्रारम्भ में उन्होंने कैरिवक में बच्चों को पढ़ाया, फिर विंबलडन में खुद का विद्यालय स्थापित कर शिक्षण में नवाचार पद्धति को अपनाया। लेखन में रूचि होने के कारण वे विविध पत्र–पत्रिकाओं में लिखती थी। उनका विवाह जिस युवक से तय हुआ, उसकी मृत्यु भी हो गई। मानसिक रूप से परेशान वे धर्म पर आधारित पुस्तकें पढ़ने लगी।

1893 में आयोजित अमेरिका की धर्म सभा से वापस लौटते हुए विवेकानन्द लन्दन में 3 महीने के प्रवास पर थे। मार्गरेट उनसे अपनी एक मित्र के निवास पर मिली, जहां वे वेदान्त दर्शन पर व्याख्यान दे रहे थे। वे उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुई। मार्गरेट के मन में धर्म, आध्यात्म सम्बन्धी अनेक जिज्ञासायें थी, जिनका उत्तर स्वामी विवेकानन्द ने धैर्य और श्रद्धा से दिया। विवेकानन्द से प्रभावित मार्गरेट ने गौतम बुद्ध के सिद्धान्तों का अध्ययन किया। विवेकानन्द ने मार्गरेट की सेवाभाव और परोपकारिता को पहचाना और निर्णय लिया कि मार्गरेट को अशिक्षित और उपेक्षित नारियों को शिक्षा देने का कार्य सौंपा जाये।

विवेकानन्द से प्रभावित मार्गरेट ने निर्णय लिया कि भारत ही उसकी कर्मभूमि हो सकता है। इसलिए धर्म और आध्यात्म के विविध स्तरों को जानने के लिए 1898 में वे भारत आयी। यहां विवेकानन्द से दीक्षा प्राप्त कर मार्गरेट को विवेकानन्द ने नया नाम निवेदिता दिया, जिसका अर्थ है समर्पिता। भारतीय दर्शन, सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, इतिहास आदि का ज्ञान प्राप्त कर मार्गरेट बहुत खुश थी। बाद में विवेकानन्द के मार्गदर्शन में कलकता गई और वहां उन्होंने लड़कियों के लिए स्कूल खोला। वहां वे श्री रामकृष्ण परमहंस की पत्नी शारदा देवी से मिली, जिन्होंने उन्हें पुत्रीवत स्नेह दिया।

1898 में मार्गरेट ने ब्रह्मचर्य स्वीकार किया। इस प्रकार भगिनी निवेदिता भारतीय पंथ को अपनाने वाली पहली पश्चिमी महिला बनी। भगिनी निवेदिता ने

नुभवों का जिक अपनी पुस्तक 'द मास्टर ऐज आई सॉ
ो विवेकानन्द की आध्यात्मिक पुत्री कहती थी।

साथ वो पूरी तरह देश के उपेक्षित व निसहाय वर्ग के
भी उनके सम्पर्क में आता, वे अपने सेवाभाव और ज्ञान
कर देती। उन्होंने अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों को प्रेरणा
गरम दल व नरम दल दोनों से ही उनके आत्मीय संबंध
ों को स्वदेशी कलाओं के विकास के लिए प्रेरित किया।
ठाकुर जैसे कलाकारों को पुरातन भारतीय कला के
।। सुब्रह्मण्यम भारती के विख्यात भारतभक्ति स्तोत्र की
श्री अरविन्द के क्रांतिकारियों को स्वतन्त्रता के लिए
उन्होंने सहयोग दिया। किसी विदेशी विद्वान के द्वारा
जन टिप्पणी करने पर वे तर्कयुक्त खण्डन करती।
ान पद्धति का अध्ययन वर्तमान युग में भी प्रासंगिक है।
ेवाकार्य में सहयोग करती। कलकता में भीषण प्लेग
में सेवा कार्य का आदर्श स्थापित किया। वे भारतीय
न्तु विवेकानन्द के सिद्धान्तों और आदर्शों का राजनीति
। विवेकानन्द की मृत्यु के बाद उन्होंने संघ से त्यागपत्र
कभी भी किसी राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग नहीं लिया,
ख्यानों के माध्यम से उन्होंने भारतीय युवाओं को
या।

की शारीरिक व मानसिक योग्यता समान नहीं होती
त्येक व्यक्ति को अपने आदर्श को जीवन में ढालना
ी का अनुसरण करना चाहिये। वर्तमान समय में मानव
वह दूसरों के सुखों से दुखी है। हम एक दूसरे की
और लिए दुःखी रहते है। इसके लिए विवेकानन्द
त्री भाव रखें, दीन दुखियों के प्रति दयावान हो, लोगों
ों और दुष्टों के प्रति उपेक्षा दिखायें। अपने कष्टों व

दुःखों के लिए हम दूसरे व्यक्तियों या परिस्थितियों को जिम्मेदार मानते हैं, पर दुःखों के कारण हम, हमारा व्यवहार एवं हमारे कर्म हैं अतः पहले स्वयं के दोषों को पहचानकर उन्हें दूर कर स्वयं को सबल बनाओ।

शिक्षा व्यक्ति की अन्तरात्मा को झकझोर हमें पूर्ण बनाती हैं तथा सांस्कृतिक व सामाजिक स्तर पर व्यक्ति को पहचान दिलाती है। जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, जो मनुष्य में चरित्र, बल, परहित भावना और सिंह के समान साहस नहीं ला सकती, वह शिक्षा हो ही नहीं सकती। शिक्षा का मतलब यह कदापि नहीं है कि व्यक्ति के दिमाग में ऐसी बाँतें ठूँसी जायें, कि उसे उसका दिमाग जीवन भर हजम न कर पाये। विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा ही वह तत्व है, जिसके द्वारा व्यक्ति पूर्णता को प्राप्त करता है।

यदि तुम पाँच भावों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या) को हजम कर उनके अनुसार जीवन व चरित्र गठित कर सको तो तुम्हारी शिक्षा उस व्यक्ति की तुलना में अधिक हैं, जिसे पूरा पुस्तकालय कण्ठस्थ हों।

ऐसे मनोभाव से युक्त वे प्रतिक्षण कन्याओं की शिक्षा के लिए प्रयत्नशील रहती। कन्याओं के माता–पिता से उन्हें विद्यालय भेजने का अनुरोध करती। उस संघर्षशील समय में भी वे शिक्षा में नवाचार पद्धति का प्रयोग करती। शिक्षा के क्षेत्र में नित नए प्रयोग कर वे प्रयास करती कि अधिक से अधिक लड़कियां शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर हों। कलकता के बागबाजार में उन्होंने यही उद्देश्य लेकर कन्याओं के लिए विद्यालय खोला, जिसका उद्घाटन श्री रामकृष्ण परमरहंस की पत्नी शारदा देवी ने किया ।

उपसंहार

निष्कर्षतः भगिनी निवेदिता भले ही भारत में ना जन्मी हो किन्तु भारत भूमि के लिए उनका समर्पण, उनकी निष्ठा निश्चित ही अभिनन्दनीय हैं। वर्तमान युग में जब हमारी युवा पीढ़ी आधुनिकता की चकाचौंध से ग्रस्त होकर केवल आलस्य और उन्माद के गर्त में लिप्त होती जा रही हैं, ऐसे समय में भगिनी निवेदिता का चरित्र एवं कृतित्व निश्चय ही अनुकरणीय है। उनका मानना था कि नारी का शिक्षित एवं सशक्त होना आवश्यक है क्योंकि नारी सशक्तिकरण के बिना मानवता का विकास अधूरा हैं। वास्तव में देखा जाये तो ऐसे विदूषी नारियों ने ही महिला सशक्तिकरण की नींव रखी। यह जरूरी है कि महिला अपनी शक्तियों को समझे और यह तभी हो सकता है जब वह शिक्षित हो।

साथ ही उन्होंने बताया कि धर्म, आध्यात्म मानसिक तृप्ति के साधन है और जब तक मानव मानसिक रूप से संतुष्ट नहीं होगा, तब तक उसके जीवन में सुख, शांति व आनन्द नहीं हो सकता। राष्ट्रप्रेम, स्वतंत्रता, दया, प्रेम, स्वाभिमान, परोपकार का पाठ भारत के युवाओं को पढ़ाने का उन्होंने निरन्तर प्रयास किया। वे चाहती थी कि उनकी ये कर्म भूमि विश्व के मस्तक पर बिंदी की तरह सुशोभित हो। एसी क्षेत्र में वे अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक निरन्तर प्रयत्नशील रही।

सन्दर्भ सूची

भारत में विवेकानन्द–श्री रामकृष्ण शिवानन्द स्मृति ग्रन्थमाला, श्री रामकृष्ण आश्रम, नागपुर प्रकाशन

व्यक्तित्व का विकास–विवेकानन्द

विवेकानन्द साहित्य व वेदान्त दर्शन

स्वामी विवेकानन्द–डॉ. चन्द्रिकाप्रसाद शर्मा

यौद्धा व सन्यासी–हंसराज रहबर